Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक रूपांतरण

डॉ. ममता पंवार*

* सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से इतना सक्षम बनाना है कि वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकें। भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ पितृसत्तात्मक व्यवस्था की जड़ें गहरी हैं, स्वयं सहायता समूह एक क्रांतिकारी मॉडल बनकर उभरे हैं। SHG 10-20 महिलाओं का एक स्वैच्छिक समूह होता है, जो अपनी छोटी-छोटी बचतों को इकट्ठा करती हैं और जरूरत पड़ने पर समूह के सदस्यों को कम ब्याज पर ऋण देती हैं। यह श्बचत के माध्यम से स्वावलंबनश् के सिद्धांत पर कार्य करता है।

यह 'नाबार्ड' और 'राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के सिद्धांतों पर आधारित है। भारत में NABARD द्वारा शुरू किया गया। 'SHG-बैंक लिंकेज कार्यक्रम' दुनिया का सबसे बड़ा सूक्ष्म वित्त कार्यक्रम बन गया है। यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि कैसे ये समूह केवल बचत का माध्यम न रहकर सामाजिक बदलाव का हथियार बन गए हैं।

शोध के उद्देश्य :

1. महिला सदस्यों की आय के स्तर में सुधार का अध्ययन करना।
2. निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण करना।
3. SHG के सामने आने वाली चुनौतियों (जैसे डिजिटल साक्षरता की कमी) की पहचान करना।

इस शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़े का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक आंकड़े: इसके अंतर्गत 50 महिला सदस्यों का साक्षात्कार किया गया। जिनको निर्देशन विधि से चुना गया।

द्वितीयक आंकड़े : सरकारी रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25, और पूर्व शोध पत्र।

शोध के अंतर्गत स्वय सहायता समूह के सदस्य बनने के पूर्व तथा उपरांत उनकी दशा का विश्लेषण किया गया है।

सदस्य बनने के उपरांत औसत मासिक आय रू2,000 से बढ़कर रू 5,500 हुई।

बैंक खाता संचालन 80% महिलाएं अब स्वयं बैंक जाती हैं।

निर्णय लेना घरेलू खर्चों में 70% महिलाओं की राय ली जाती है।

ऋण तक पहुंच उनकी संभव हुई है। साहूकारों के चंगुल से मुक्ति मिली।

कौशल विकास हुआ है। सिलाई, पापड़ उद्योग, और जैविक खेती जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है।

उद्यमिता का अर्थ केवल बड़ा व्यवसाय करना नहीं है, बल्कि संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना है।SHG के माध्यम से महिलाएं निम्नलिखित क्षेत्रों में उद्यमी बन रही हैं:

कृषि आधारित: जैविक खाद बनाना, बीज बैंक, पशुपालन और डेयरी।

खाद्य प्रसंस्करण: अचार, पापड़, मसाला उद्योग और शहद उत्पादन।

हस्तशिल्प: सिलाई, बुनाई, जूट के बैग और टेराकोटा कला।

सेवा क्षेत्र: बैंक सखी, कृषि सखी और ई-कॉमर्स सखियों के रूप में कार्य।

सशक्तिकरण के तीन स्तंभ

आर्थिक सशक्तिकरण – ऋण की सुलभता ने महिलाओं को साहूकारों के शोषण से मुक्त किया है। जब एक महिला अपनी आय अर्जित करती है, तो उसकी क्रय शक्ति बढ़ती है, जिसका सीधा असर बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर पड़ता है। आर्थिक सशक्तिकरण का सबसे बड़ा प्रमाण 'जेब में पैसा' होना नहीं, बल्कि उस पैसे को 'खर्च करने का अधिकार' होना है।

जब महिलाएं घर की आय में सक्रिय योगदान देती हैं, तो बच्चों की शिक्षा, संपत्ति की खरीद और पारिवारिक निवेश में उनकी राय को महत्व दिया जाने लगता है। यह पितृसत्तात्मक ढांचे में एक मौन लेकिन ठोस प्रहार है।

वित्तीय समावेशन: बैंक तक पहुँच न रखने वाली महिलाओं को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ना।

ऋण जाल से मुक्ति: साहूकारों के ऊंचे ब्याज दर के चक्र को तोड़ना।

आय सृजन: सिलाई, अचार-पापड़ उद्योग, पशुपालन और हस्तशिल्प जैसे छोटे व्यवसायों की शुरुआत। महिलाएं अब पारंपरिक खेती से हटकर मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन और आर्गेनिक खेती जैसे उच्च मूल्य वाले कार्यों की ओर बढ़ रही हैं।

SHG महिलाएं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल का उपयोग करती हैं।

उदाहरण के तौर पर, यदि किसी गांव में टमाटर की पैदावार अधिक है, तो समूह की महिलाएं उसका सॉस या पाउडर बनाकर उसे ऊंचे दामों पर बेचती हैं। यह 'लोकल टू ग्लोबल' की अवधारणा का जीता-जागता उदाहरण है।

सामाजिक सशक्तिकरण – समूह की बैठकों में महिलाएं घरेलू हिंसा, बाल विवाह और स्वच्छता जैसे विषयों पर चर्चा करती हैं। इससे उनमें सामुदायिक चेतना विकसित होती है। अब वे ग्राम सभाओं में अपनी आवाज उठाती हैं।

आत्मविश्वास में वृद्धि: समूह की बैठकों में बोलने से महिलाओं का संकोच दूर होता है और उनमें नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।

कुप्रथाओं के विरुद्ध एकजुटता: बाल विवाह, घरेलू हिंसा और दहेज प्रथा जैसी बुराइयों के खिलाफ महिलाएं संगठित होकर आवाज उठाती हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य: जागरूक महिलाएं अपने बच्चों (विशेषकर बेटियों) की शिक्षा और परिवार के स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग रहती हैं।

मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण : स्वयं का बैंक खाता होने और वित्तीय लेनदेन करने से महिलाओं के आत्मविश्वास में अभूतपूर्व वृद्धि होती है। यह 'मैं कर सकती हूँ' की भावना ही उद्यमिता की नींव है।

राजनीतिक सशक्तिकरण – ग्राम सभाओं और स्थानीय निकायों (पंचायत) में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। कई SHG सदस्य आज ग्राम प्रधान या वार्ड सदस्य के रूप में कार्य कर रही हैं।

चुनौतियाँ और बाधाएँ – सफलता के बावजूद, SHG मॉडल के सामने कुछ गंभीर चुनौतियाँ हैं:

1. **कच्चे माल और बाजार की कमी:** उत्पाद तो बन जाते हैं, लेकिन उन्हें बेचने के लिए उचित बाजार नहीं मिल पाता हैं।
2. **तकनीकी ज्ञान का अभाव:** आधुनिक मशीनों और डिजिटल मार्केटिंग की जानकारी कम होना हैं।
3. **पारिवारिक हस्तक्षेप:** कई मामलों में महिलाओं के निर्णयों पर परिवार के पुरुषों का नियंत्रण बना रहता हैं।
4. **तकनीकी बाधा:** लखपति दीदी: योजना के बावजूद, डिजिटल भुगतान में अभी भी झिझक है। ग्रामीण महिलाओं को ऑनलाइन बैंकिंग और मार्केटिंग का पर्याप्त ज्ञान न होना।
5. **बाजार का अभाव:** उत्पादों की गुणवत्ता अच्छी होने के बावजूद उन्हें उचित बाजार नहीं मिल पाता।
6. **पितृसत्तात्मक सोच:** कई बार महिला के नाम पर ऋण लेकर पुरुष उसका उपयोग करते हैं।

उदाहरण: उत्तर प्रदेश के एक छोटे गांव की 'प्रेरणा समूह' की महिलाओं ने मिलकर सौर ऊर्जा लैंप बनाने का काम शुरू किया। आज वे न केवल अपने घर रोशन कर रही हैं, बल्कि आसपास के 5 गांवों में बिजली की समस्या का समाधान भी कर रही हैं।

छत्तीसगढ़ की 'बिहान' योजना (सफलता की कहानी) – छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं ने SHG के माध्यम से 'गोठान' (Gauthan) प्रबंधन संभाला। उन्होंने गोबर से वर्मी कंपोस्ट (खाद) बनाई और उसे सरकार को बेचा।

आर्थिक परिणाम: जिन महिलाओं के पास पहले आय का कोई जरिया नहीं था, उन्होंने ट्रैक्टर खरीदे और अपने बच्चों को शहरों के अच्छे स्कूलों में भेजा। यह दर्शाता है कि कैसे अपशिष्ट को संपदा में बदला जा सकता है।

केरल का 'कुडुम्बश्री' मॉडल – यह दुनिया के सबसे बड़े महिला सशक्तिकरण नेटवर्क में से एक है। यहाँ महिलाओं ने केवल सिलाई-कढ़ाई नहीं की, बल्कि प्ज क्षेत्र, टैक्सी सेवाएं और सामुदायिक रसोई चलाईं।

सीख: जब महिलाओं को बड़े स्तर पर संगठित किया जाता है, तो वे राज्य की अर्थव्यवस्था का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाती हैं।

आंकड़ों से पता चलता है कि जिन परिवारों की महिलाएं SHG से जुड़ी हैं, वहां गरीबी की रेखा से ऊपर उठने की दर 30% अधिक रही है। सामूहिक जिम्मेदारी के कारण ऋण वापसी (Repayment) की दर भी 95% से अधिक देखी गई है, जो बड़े कॉर्पोरेट ऋणों की तुलना में कहीं बेहतर है।

निष्कर्ष और सुझाव – स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण का केवल एक जरिया नहीं, बल्कि एक मौन क्रांति है। इसने महिलाओं को 'उपभोक्ता' से 'उत्पादक' बना दिया है। 'जब एक महिला सशक्त होती है, तो पूरा परिवार और समाज सशक्त होता है।' निष्कर्ष यह है कि SHG केवल वित्तीय संस्थान नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक परिवर्तन की प्रयोगशालाएं हैं। स्वयं सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। यदि इन्हें ई-कॉमर्स प्लेटफार्मों से जोड़ा जाए और व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाए, तो ये 'विकसित भारत @2047'के सपने को सच करने में बड़ी भूमिका निभाएंगे।

ब्रांडिंग: SHG उत्पादों को एक विशिष्ट ब्रांड नाम दिया जाना चाहिए ताकि उनकी पहचान बढ़े। SHG उत्पादों के लिए एक 'राज्य-स्तरीय ब्रांड' बनाया जाना चाहिए।

डिजिटल साक्षरता: 'डिजिटल सखी' जैसी पहलों को और विस्तार देना चाहिए ताकि भुगतान पूरी तरह पारदर्शी हो।

कोल्ड स्टोरेज: खराब होने वाले उत्पादों (जैसे फल-सब्जी) के लिए स्थानीय स्तर पर स्टोरेज की सुविधा दी जाए। तकनीकी प्रशिक्षण के लिए ब्लॉक स्तर पर कार्यशालाएं आयोजित होनी चाहिए। पुरुषों को सशक्तिकरण प्रक्रिया में सहयोगी के रूप में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. NABARD (2023): Status of Microfinance in India 2022-23. Annual Report.
2. Khandker, S. R. (2005): "Microfinance and Poverty: Evidence Using Panel Data from Bangladesh". World Bank Economic Review.
3. ग्रामीण विकास मंत्रालय (MoRD): दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) की प्रगति रिपोर्ट (2024)।
4. Sinha, F. (2006): Self-Help Groups in India: A Statistical Overview. SAGE Publications.

****